अन्दाज़-ए-जिगर

जिगर जालन्धरी

जब पड़ा अक्से-यार[1] फूलों पर,
आ गया फिर निखार फूलों पर।
तेरे चेहरे से मिलते जुलते हैं,
क्यों न फिर आये प्यार फूलों पर?
हम नहीं क़ाइल[2] उन बहारों के,
जिनका हो इनहसार[3] फूलों पर।
प्यार करता है कोई कांटों से,
और कोई निसार फूलों पर।
कट गये ज़िन्दगी के आठ पहर,
चार कांटों पे, चार फूलों पर।
उनके रुखसारे-सुर्ख़[4] पर आँसु,
पड़ रही है फुहार फूलों पर।
आंधीयां चल रही हैं गुलशन में,
जम रहा हैं ग़ुबार फूलों पर।
शामे-फ़ुरक़त[5] में दाग़ रोशन हैं,
है खज़ां में बहार फूलों पर।
ऐ 'जिगर' हुस्ने-यार हावी है,
गुलसितां के हज़ार फूलों पर।

---

1. दोस्त की परछाई 2. मानने वाले 3. निर्भर 4. सुर्ख़ गाल
5. जुदाई की शाम।

जब वो ना-मेहरबां नहीं होता,
आसमां आसमां नहीं होता ।
हम ज़माने से क्या उमीद करें ?
तू ही जब मेहरबां नहीं होता ।
कहां आराम ढूंडने जायें ?
किस जगह आसमां नहीं होता ?
मेरी नज़रों से दूर रह कर भी,
वो नज़र से निहां नहीं होता ।
उसको नज़रें बयान करती हैं,
जो ज़बां से ब्यां नहीं होता ।
उज़र अब क्यों है मुझसे मिलने में ?
मैं तेरे दरम्यां नहीं होता ।
दैरो-काबा[1] में ढूंडने वालो !
उसका जलवा कहां नहीं होता ?
दर्द का क्या सबूत पेश करूं ?
इसका कोई निशां नहीं होता ।
लाख आराम हों क़फ़स में, मगर,
फिर भी वो आशियां नहीं होता ।
इम्तहाने-वफ़ा से बढ़ के 'जिगर'
कोई भी इम्तहां नहीं होता ।

---

1. मन्दिर-मस्जिद ।

इस का नहीं है ग़म कि फ़क़त ग़म दिया मुझे,
इसकी ख़ुशी है आप से कुछ तो मिला मुझे।
गो हर बला में इसने किया मुब्तला[1] मुझे,
फिर भी मिला न दिल सा कोई आशना मुझे।
इसकी अज़ीयतों[2] से करूं तरके-आशिक़ी[3],
हैरान हूं, ज़माना समझता है क्या मुझे?
इक खास मेहरबान की ये खास देन है,
ग़म क्यों न हों अज़ीज़ खुशी से सिवा मुझे?
दुनिया पुकारती है मुझे तेरे नाम से,
बख़शा है तेरे इश्क़ ने क्या मरतबा मुझे?
दुनिया की उलझनों से बचाने के वास्ते,
दीवाना अपने दिल को बनाना पड़ा मुझे।
उनकी निगाहे-मस्त से पीता हूं रात दिन,
दुनिया समझ रही है 'जिगर' पारसा मुझे।

---

1. गरिफ़्तार 2. कष्ट 3. प्यार को छोड़ना।

या रब ! मेरे सिवा न किसी को सताये ग़म,
दुनिया से जब मैं जाऊं, मेरे साथ जाये ग़म।
आना जो चाहता है मेरे पास, आये ग़म,
मैं आज़माऊं ग़म को, मुझे आज़माये ग़म।
क्या फ़ायदा तड़पने का, ऐ मुब्तलाये-ग़म !
जब मौत के सिवा नहीं कोई दवाए-ग़म।
रोता हूं दूसरों की मुसर्रत के वास्ते,
खुशियों को बांटता हूं मैं लेकर पराये ग़म।
पत्थर बना हुआ हूं मैं बेताबियों के बाद,
वो इब्तदाये-ग़म[1] थी, ये है इन्तहाये-ग़म।
अब आंसुयों को पोंछिये, दिल को संभालिये[2],
कहते थे बार बार "सुना माजरा-ए-ग़म"।
मिलती है ये तो चीज़ किसी खुशनसीब को,
हर एक का नसीब कहा है कि खाये ग़म ?
खातिर तवाज़ो उसकी हो जब खूने-दिल के साथ,
खुश हो के क्यों न फिर मेरे पहलू में आये ग़म ?
क़िस्मत हमारी उसको 'जिगर' ! सौंप दी गई,
कुछ भी नहीं न हाथ में जिसके सिवाये-ग़म।

. ग़म की शुरूआत 2. ग़म का अंत

❋

उम्रे-दो-रोज़ा[1] ने आराम से रहने न दिया,
मुझको जी भरके तेरा जौर भी सहने न दिया।
ख़ुद-नुमाई[2] की हवा ऐसी चली, जिसने कहीं,
एक भी परदा-नशीं परदे में रहने न दिया।
मौज-ज़न[3] दिल में समुंदर थे मगर उनके हुज़ूर[4],
ज़ब्ते-कमबख़त ने इक अश्क भी बहने न दिया।
हम तो कुछ भी नहीं हैं, तेरी तलब[5] ने शबो-रोज़,
चांद सूरज को भी आराम से रहने न दिया।
घर में, महफ़िल में, चमन-ज़ारों में, सहराओं में
बे-क़रारी ने कहीं चैन से रहने न दिया।
आग लग जाये 'जिगर'! ऐसी वफ़ादारी को,
जिसने क़ातिल को भी क़ातिल हमें कहने न दिया।

---

1. दो दिन की ज़िन्दगी 2. नुमाइश 3. लहरें मारते हुए 4. सामने
5. तलाश।

आज क्या जाने, चमन वालों पे क्या गुज़री है ?
सिसकियां भरती हुई बादे-सबा[1] गुज़री है ।
ज़िन्दगी मेरी जो गुज़री है तो क्या गुज़री है !
क़हर गुज़रा है मेरे सर से, बला गुज़री है ।
हर नफ़स[2] इसने मुझे कूच का पैग़ाम दिया,
बन के हर सांस मेरी बांगे-दरा[3] गुज़री है ।
मैंने कांटों से भी फूलों की तरह प्यार किया,
ज़िन्दगानी मेरी मानिंदे-सबा[4] गुज़री है ।
किसी बेचारे का दिल टूट गया हो शायद,
दिल-शिकन[5] इक मेरे कानों में सदा गुज़री है ।
अहले-गुलशन तो 'जिगर' ! फिर भी हैं अहले-गुलशन,
हम क़फ़स[6] वालों से तो बच के सबा गुज़री है ।

---

1. हवा 2. सांस 3. घंटे की आवाज़ 4. हवा की तरह
5. दिल तोड़ने वाली 6. पिंजरा ।

निक़ाब इसलिये रुख़ से उठाई जाती है,
हमारी ताबे-नज़र[1] आज़माई जाती है।
छुपा के चेहरे को रखना फ़ज़ूल है, ऐ दोस्त !
जो चीज़ देखने की हो, दिखाई जाती है।
मिलायें दिल से वो दिल क्या, यही ग़नीमत जान,
कभी कभी जो नज़र ही मिलाई जाती है।
किसी से बज़्म में वो हंस के बात करते हैं,
किसी के सीने पे बिजली गिराई जाती है।
सरिश्ते-ख़ार[2] न बदली गुलों की सोहबत में,
बुरे हैं जो, कभी उनकी बुराई जाती है ?
जो शक्ल सिर्फ़ हमीं को दिखाई जाती थी,
ग़ज़ब है, आज हमीं से छुपाई जाती है।
ग़ुबारे-दिल[3] न मिटा उनका मेरे मिटने पे भी,
जगह जगह मेरी मिट्टी उड़ाई जाती है।
हम इन बुतों को 'जिगर' ! क्यों न फिर ख़ुदा मानें ?
जिधर ये जाते हैं, सारी ख़ुदाई जाती है।

1. देखने की ताक़त 2. काटें की आदत 3. दिल का धुआं।

एक पैमाने से हर इक को पिला दे साक़ी।
अदनाओ-आला[1] की तफ़रीक़[2] मिटा दे साक़ी।
रहन रखने को मैं तैयार हूं अपनी हस्ती,
तू जो मयखाना मेरे नाम लगा दे साक़ी!
तेरे मयखाने में रौनक़ है मेरे ही दम से,
हश्र[3] तक ज़िंदा रहूं मैं, ये दुआ दे साक़ी!
देख ये अदनाओ-आला की बिना[4] हर तक़सीम,
कहीं मयखाने की अज़मत[5] न घटा दे साक़ी!
तेरे मयखाने की ख़ैर, ऐसी पिला दे मुझ को,
हश्र तक जो मुझे मस्ताना बना दे साक़ी!
दस्ते-नाज़ुक[6] से उठायेगा कहां तक साग़र?
मस्त नज़रों से बस इक जाम पिला दे साक़ी!
अब किसी तौर संभाला नहीं जाता मुझ से,
जामे-मय ख़ुद मेरे होटों से लगा दे साक़ी!
देख, इन प्यासों की आहों का सरशकों[7] का हजूम,
मयकदे में कोई तूफ़ां न उठा दे साक़ी!
जामो-पैमाना उठाने की ज़रूरत न पड़े,
एक ही शे'र 'जिगर' का तू सुना दे साक़ी!

छोटा और बड़ा 2. फ़र्क़ 3. प्रलय 4. आधार 5. बड़प्पन कोमल हाथ 7. आंसू।

सामने अपने सुराही, जाम, पैमाना रहे,
उमर भर ऐ काश ! इन यारों से याराना रहे।
गुल के बुलबुल, शमा के नज़दीक परवाना रहे,
किस तरह फिर दूर तुझसे तेरा दीवाना रहे ?
रह के गरदिश में भी इनसां खिदमते-ईनसां[1] करे,
इस जहां के मयकदे[2] में बन के पैमाना रहे।
देख कर जलवे बुतों के दिल से निकली ये दुआ,
"या इलाही हश्र तक आबाद बुतखाना रहे।"
अक़ल वाले को ज़माने में हैं लाखों रंजो-ग़म,
इन से बच सकता है वो, जो बन के दीवाना रहे।
इस की मिट्टी में है हम गरदिश-नसीबों[3] का खमीर,
जिन्दगी भर क्यों न फिर गरदिश में पैमाना रहे ?
साक़ीया ! कुछ इस तरह तक़सीम का कर इंतज़ाम,
बज़म में खाली किसी का भी न पैमाना रहे।
शौक़ इतना है उन्हें बनने संवरने का 'जिगर' !
चाहते हैं पास आईना रहे, शाना[4] रहे।

1. जन सेवा 2. शराब खाना 3. बदनसीब 4. कंघी।

ज़मीने-हिन्द को गुलशन बनाने की ज़रूरत है,
ज़माने में विक़ार[1] इसका बढ़ाने की ज़रूरत है।
चिराग़े-इश्क़ सीनों में जलाकर ऐ वतन वालो,
कदूरत के अन्धेरों को मिटाने की ज़रूरत है।
वतन ही सबका मज़हब हो, वतन ही सबकी मिल्लत हो,
तमीज़े-मज़हबो मिल्लत मिटाने की ज़रूरत है।
जीयेंगे क़ौम की ख़ातिर, मरेंगे क़ौम की ख़ातिर,
क़सम ये अब हर इक हिन्दी को खाने की ज़रूरत है।
इकट्ठे हो रहे हैं ये जो ख़िरमन[2] बुग़ज़ो-नफ़रत के,
इन्हें सोज़े-महब्बत[3] से जलाने की ज़रूरत है।
न हिन्दू हैं न मुस्लिम हैं फ़क़त हिन्दोस्तानी हैं,
हर इक हिन्दी को ये नारा लगाने की ज़रूरत है।
तुम्हारी असल जब इक है तो फिर क्यों नस्ल के झगड़े,
ये हक़ की बात हर इक को बताने की ज़रूरत है।
अज़ां[4] मन्दिर से आए, शंख की आवाज़ मस्जिद से,
रहे-हक़[5] में तअस्सुब भूल जाने की ज़रूरत है।
वो गुलशन जिसको सींचा है लहू देकर शहीदों ने,
उसे नफ़रत की आंधी से बचाने की ज़रूरत है।
हवादिस[6] की कड़कती धूप से महफ़ूज़ रखने को,
वतन को एकता के शामियाने की ज़रूरत है।
बजाए रोशनी देने के जो घर फूंक देते हैं,
'जिगर' ! ऐसे चिराग़ों को बुझाने की ज़रूरत है।

---

1. शान 2 खलयान 3. महब्बत की ज्वाला 4. बांग 5 सच्चाई का रास्ता 6. हादिसे।